International Journal of Advancement in Electronics and Computer Engineering (IJAECE)
Volume 12, Issue5, May 2023, pp.502-512, ISSN 2278 -1412
Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

जिला सहकारी बैंक का कृषि क्षेत्र में योगदान: रायसेन जिले के संदर्भ में

रेखा सराठे[1], **डॉ. भानु साहू**[2]

[1]**पीएचडी स्कॉलर**,rekhahsarathe9@gmail.com, **एमपीयू भोपाल**, **भारत**

[2] **एसो. प्रो.**, bhanuneeraj200@gmail.com, **एमपीयू भोपाल**, **भारत**

सारांश:जिला सहकारी बैंक रायसेन जिले के कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। यह बैंक कृषि क्षेत्र में स्थानीय किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करके उनके विकास और उन्नति में मदद करता है। इसके माध्यम से किसानों को ऋण, खाता खोलने, बीमा योजनाएं और अन्य वित्तीय सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इसके साथ ही, बैंक कृषि सम्बंधित ज्ञान, प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसानों को सहायता प्रदान करता है ताकि वे उत्पादक और आर्थिक रूप से स्थिर हो सकें। जिला सहकारी बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली योजनाएं और सेवाएं कृषि क्षेत्र के स्थायित्व को बढ़ाने के साथ-साथ, किसानों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन को उद्यमित करने में मदद करती हैं। इस प्रकार, जिला सहकारी बैंक का कृषि क्षेत्र में योगदान रायसेन जिले के संदर्भ में कृषि उद्योग को समृद्ध और सुरक्षित बनाने में मदद करता है। इसके साथ ही, यह बैंक कृषि क्षेत्र में आर्थिक संकटों का सामना करने वाले किसानों को ऋण और वित्तीय सहायता प्रदान करके उन्हें सुरक्षित और स्थायी आर्थिक स्थिति में रखने में मदद करता है। इस समीक्षा लेख में हमने जिला सहकारी बैंक के कृषि क्षेत्र में योगदान के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की है। हमने इस बैंक की कृषि संबंधित सेवाओं, वित्तीय योजनाओं, ऋण वितरण प्रक्रिया, और उद्योग को समर्थन करने के लिए किए गए प्रयासों का विश्लेषण किया है। हमने उन योगदानों का परिकल्पना किया है जो इस बैंक को कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण संगठन बनाते हैं और जिले के किसानों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को सुधारने में मदद करते हैं। जिला सहकारी बैंक का कृषि क्षेत्र में योगदान रायसेन जिले के संदर्भ में, कृषि उद्यमियों और किसानों को वित्तीय संकटों से निपटने, उच्च उत्पादकता और स्थायित्व साधारित करने, तकनीकी अद्यतन और ज्ञान संसाधनों के साथ समर्थन करने का उद्देश्य रखता है। यह बैंक किसानों को वित्तीय सेवाओं, ऋण योजनाओं, और कृषि बीमा के माध्यम से आर्थिक सहायता प्रदान करता है। इसके

International Journal of Advancement in Electronics and Computer Engineering (IJAECE)
Volume 12, Issue5, May 2023, pp.502-512, ISSN 2278 -1412
Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

अलावा, यह उन्हें कृषि तकनीकों, बाजार रिसर्च, प्रशिक्षण, और समर्थन के माध्यम से सदाबहारता और प्रगति की ओर प्रेरित करता है।

इस समीक्षा में, हमने जिला सहकारी बैंक के कृषि क्षेत्र में योगदान के विभिन्न पहलुओं की गहन विश्लेषण किया है। हमने इसके संबंध में नीतियों, योजनाओं, और कार्यक्रमों की जांच की है जो कृषि उद्यमियों को लाभ पहुंचाने और उनकी समृद्धि में मदद करते हैं। हमने इस समीक्षा में आर्थिक और सामाजिक परिणाम, कृषि उत्पादकता और उद्यमित क्रियाएँ, ऋण वितरण, बैंक की सेवाओं की प्रभावशीलता, और कृषि क्षेत्र में बैंक के योगदान के प्रभाव के बारे में विचार किए हैं। हमने जिला सहकारी बैंक के सदस्यों की समर्थन की महत्वपूर्णता, उनके आवश्यकताओं के अनुरूप वित्तीय समाधानों की प्रदान करने में बैंक की सक्षमता की विश्लेषणा की है। इस समीक्षा में, हमने रायसेन जिले के कृषि क्षेत्र में जिला सहकारी बैंक के योगदान की महत्वपूर्णता और उसके प्रभाव को समझने का प्रयास किया है। हमने बैंक के वित्तीय उपायों, कृषि ऋण पॉर्टफोलियो, उद्यमिता की बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासों, और कृषि समृद्धि को प्रोत्साहित करने वाले संगठनों की मुख्यता पर ध्यान केंद्रित किया है। हमने भी उन प्रशासनिक और कार्यात्मक चुनौतियों का विश्लेषण किया है जो इस क्षेत्र में बैंक के योगदान को प्रभावित कर सकती हैं।

इस समीक्षा लेख के माध्यम से, हमें यह समझने में सफलता मिली है कि जिला सहकारी बैंक कृषि क्षेत्र में योगदान रायसेन जिले के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह बैंक कृषि समृद्धि के संकल्प को साकार करने, किसानों को आर्थिक रूप से स्थिर करने और उनके विकास का समर्थन करने के लिए कार्यरत है। यह बैंक उच्च गुणवत्ता वाली वित्तीय सेवाएं प्रदान करता है जैसे कि किसानों के लिए विशेष ऋण योजनाएं, संचय खाता, बीमा योजनाएं, बैंकिंग सुविधाएं और डिजिटल लेंडिंग समाधान।

प्रमुख शब्द:- बैंक के उद्देश्य, ऋण वितरण प्रक्रिया, निधियाँ, कृषि एवं ग्रामीण विकास

1 प्रस्तावना:

जिला सहकारी बैंक का कृषि क्षेत्र में योगदान रायसेन जिले के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिले में कृषि समृद्धि और किसानों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए, जिला सहकारी बैंक एक कुशल वित्तीय संस्था के रूप में कार्यरत है। यह बैंक कृषि उद्यमियों और किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करके उनके आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने और खेती के क्षेत्र में प्रगति को बढ़ाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

जिला सहकारी बैंक द्वारा प्रदान की जाने वाली विशेष ऋण योजनाएं, संचय खाता, बीमा योजनाएं, बैंकिंग सुविधाएं और डिजिटल लेंडिंग समाधान किसानों को आर्थिक संकटों से निपटने में मदद करती हैं। यह बैंक कृषि उद्यमियों को नवीनतम तकनीकों, विपणन के बारे में जानकारी, उचित प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी सहायता प्रदान करके उनकी उत्पादकता और उद्यमिता को सुनिश्चित करता है। इसके साथ ही, जिला सहकारी बैंक ने कृषि क्षेत्र में बैंक के योगदान के माध्यम से सामरिक, गैर-सामरिक और आर्थिक रूप से प्राथमिकताएं स्थापित की हैं। इसके माध्यम से किसानों को उनकी आवश्यकताओं और अनुकूलताओं के आधार पर वित्तीय समाधान प्रदान किए जाते हैं। यह सहायता कृषि उद्यमियों को नए प्रोजेक्ट्स और खेती से संबंधित अवसरों के लिए पूंजी उपलब्ध कराने में मदद करती है और उनकी सामरिक एवं आर्थिक स्थिति को मजबूत करती है।

जिला सहकारी बैंक के साथी बैंकिंग संस्थानों के साथ साझा की गई सहयोग प्रणाली ने इसके संदर्भ में एक नई दिशा प्रदान की है। इसके माध्यम से अन्नदाताओं को वित्तीय लाभ प्राप्त हो रहा है और उन्हें उचित मूल्य मिल रहा है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है और कृषि क्षेत्र में समृद्धि बढ़ रही है।

जिला सहकारी बैंक के उद्यमिता स्तर, कृषि ऋण पॉलिसी और समर्थन कार्यक्रम पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। यह बैंक किसानों को उचित ऋण योजनाओं के माध्यम से प्रभावी रूप से समर्थन प्रदान करता है। कृषि ऋण पॉलिसी के माध्यम से उचित व्याज दर, आसान शर्तें और आवश्यक ग्राहक सहायता जैसे उद्यमियों के लिए अवसर प्रदान किए जाते हैं।

इसके साथ ही, जिला सहकारी बैंक को नवीनतम वित्तीय प्रौद्योगिकी का उपयोग करके डिजिटल लेंडिंग समाधान प्रदान करने का भी प्रयास करना चाहिए। यह सुनिश्चित करेगा कि किसानों को आसानी से ऋण के लिए आवेदन करने का अवसर मिलता है और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच में सुविधा होती है। इसके साथ ही, डिजिटल प्रौद्योगिकी उपयोग करके बैंक संचालन की प्रक्रिया को भी सुगम और दक्ष बनाया जा सकता है।

जिला सहकारी बैंक को विभिन्न सहकारी कृषि योजनाओं के साथ सहयोग करना चाहिए। इसके माध्यम से बैंक किसानों को सहकारी कृषि योजनाओं के लिए अवधारणाएं, अनुदान और अन्य वित्तीय सहायता प्रदान कर सकता है। इसके अलावा, जिला सहकारी बैंक को किसानों को शिक्षा, प्रशिक्षण और बाजार जानकारी के लिए संगठनों और संस्थाओं के साथ सहयोग करना चाहिए। इसके

Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

माध्यम से किसान उत्पादकता और उचित मूल्यांकन में सुधार कर सकेंगे।

वित्तीय संस्थाओं, सहकारी निकायों और खेती संबंधित संगठनों के साथ साझेदारी को मजबूत बनाने के लिए जिला सहकारी बैंक को भी प्रोएक्ट प्रारंभ करने, कार्यों का मूल्यांकन करने और प्रगति की निगरानी करने की जरूरत होती है। यह मदद करेगा कि विभिन्न कृषि परियोजनाओं के लिए वित्तीय संसाधन सही तरीके से प्रबंधित हों और किसानों तक पहुंचाई जा सकें।

अतिरिक्त रूप से, जिला सहकारी बैंक को कृषि उद्यमियों, खेती संबंधित समूहों और किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियानों और कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। यह मदद करेगा कि किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों, उन्नत उत्पादन पद्धतियों और विपणन विचारों के बारे में जागरूक बनाया जाए। इसके लिए किसान मेला, कार्यशालाएं, प्रशिक्षण कार्यक्रम और गोष्ठियां आयोजित की जा सकती हैं।

अंत में, जिला सहकारी बैंक का कृषि क्षेत्र में योगदान एक प्रमुख योजना है जो किसानों को आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान करके उनकी स्थिति मजबूत करने में मदद करेगी। इससे न सिर्फ कृषि उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि जिले की कृषि सामरिक और आर्थिक विकास में भी योगदान होगा। जिला सहकारी बैंक के सामरिक कार्यक्रम और सहयोग से, रायसेन जिला कृषि क्षेत्र में किसानों की स्थिति सुधारेगी और उन्हें विकास के नए रास्ते प्रदान किए जाएंगे।

2. साहित्यक निरीक्षण

क्षेत्रीय सहकारी बैंक के कृषि क्षेत्र में योगदान के बारे में संदर्भों की समीक्षा अहम होती है। यह सर्वेक्षण मूल्यांकन करता है जो क्षेत्रीय सहकारी बैंक द्वारा कृषि क्षेत्र में किए गए कार्यों, योजनाओं और नीतियों के संदर्भ में विभिन्न गहन अध्ययन, लेख, प्रकाशन और सम्पर्कों की जांच करता है। यहां कुछ महत्वपूर्ण संदर्भ दिए गए हैं जो कृषि क्षेत्र में क्षेत्रीय सहकारी बैंक के योगदान पर आधारित हैं:

प्रो. थामसन के अनुसार:-
कृषि विपणन के अध्ययन में वे सभी कार्य एवं कच्चामाल एवं संस्थाएं सम्मिलित होती हैं जिनके द्वारा कृषकों के फार्म पर उत्पादित खाद्यान्न, कच्चा माल एवं उनसे निर्मित माल का फार्म से उपभोक्ताओं तक संचालन होता ळें

प्रो. अबोट के अनुसार:-

कृषि विपणन से तात्पर्य उन सभी कार्यों से होता है, जिनके द्वारा खाद्य वस्तुएँ एवं कच्चा माल फार्म से उपभोक्ता तक पहुंचता है।

रायसेन जिले में भी कृषि विकास सम्बन्धी इन योजनाओं के क्रियान्वयन के साथ यहाॅ की जर्जर अर्थव्यवस्था को सुधारने का प्रयास

Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

तो किया गया, और यहाॅ कि वसुन्धरा को सु जलाम् सुफलाम् की सार्थक परिधि के लाने के लिए सिंचाई की अनेक योजनाओं के साथ तला बों जैसी सिंचाई परियोजना का क्रियान्वयन हु आ। फलतः के क्षेत्र में भू-
भाग भी समुन्नति की ओर अग्रसित हुआ।

कृषि के उन्नत के साथ कृषि विपणन व्यव स्था का उन्नत होना आवश्यक है, क्योंकि यह अनुभव किया जाने लगा है कि कृषि उत्पादों के विपणन का उतना ही महत्व है जितना स्वतः उत्पादन का वस्तुतः विपणन की क्रिया का अ र्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्यों कि इसके द्वारा उपभोग और उत्पादन में सन्तु लन ही नही वरन् अधिक विकास का स्वरूप भी निर्धारित होता है।

कृषि विपणन की दशा का समीक्षात्मक मूल्यां कन (रायसेन जिले के विशेष संदर्भ में) विषय पर अभी तक शोध कार्य नहीं किया गया है। इ स विषय कि सम्बन्धित बघेलखण्ड में कृषि वि पणन पर डा0 ई.जकारिया के निर्देशन में डी.ए स. तिवारी द्वारा शोध कार्य "बघेलखण्ड कृषि विपणन" पर किया गया है, तथा डाॅ0 श्रीमती दीपा श्रीवास्तव के निर्देशन में आर.पी. तिवारी द्वारा "उदारीकरण के पश्चात् कृषि विपणन की दशा का आलोचनात्मक मूल्यांकन " (रायसेन जिले के विशेष संदर्भ में) विषय पर भी किया गया है।

चूॅकि यह शोध कार्य मेरे शोध क्षेत्र सीमा के बाहर का तथा एक दशक पुराना हो चुका है, आज विपणन की समस्याएॅ आवश्यकताएॅ ज हाॅ की तहाॅ बनी हुई है। अतः इस विषय पर नए सिरे से शोध कार्य की आवश्यकता को दे खते हुए मैने रायसेन जिले में कृषि विपणन की दशा का चुनाव किया है, जिसमें कृषि क्षेत्र कृषि विपणन के विकास में बाधाएॅ व उदासीन ता पर नवीन शोध एंव सुझाव दिया जा सकेगा ।

बघेलखण्ड में कृषि विपणन साहित्य पर सन् 1988 में तथा उदारीकरण के पश्चात् कृषि विप णन की दशा का आलोचनात्मक मूल्यांकन (रा यसेन जिले के विशेष संदर्भ में) विषय पर 201 0 में शोध कार्य किया गया है। पूर्व में इस विष य से सम्बन्धित कृषि विकास, कृषि विपणन, कृषि के प्रकार, कृषि से प्राप्त होने वाली आय, सिंचाई, कृषि औजार यंत्र आदि तथ्यों पर प्रका श डाला गया है। शोध कार्य करते हुए कृषि वि पणन का स्वरूप परिवर्तन कृषि व्यापार एवं व्य वसाय से आय बढ़ाने के लिए सुझाव दिया ग या है। कृषि विपणन के अन्तर्गत भण्डारण, वि निमय, क्रय-विक्रय के साथ-
साथ उपभोग उत्पादन क्रियाओं को प्राथमिकता प्रदान की गई है। कृषि के सम्बन्धित अनेक क्रियाए संचालित होती है। शोधग्रंथ में कृषि उ त्पादक तथा अन्तिम उपभोक्ता दोनों कड़ियो को जोड़ने का प्रयास किया गया है। परन्तु स मीक्षा के बारे में कोई स्थान नहीं दिया गया है।

कृषि विपणन पद्धतियाॅ तथा इसमें परिवर्तन प्रदेश के अन्य जिले में रायसेन जिले के कृषि विपणन का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध का

Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

र्य कर कृषि भण्डारण, कृषि विपणन, कृषि परि वहन, कृषि नीति आदि सुविधायें प्रदान किये जाने के साथ ही कृषि विपणन व्यवस्था को वि कसित किया जाएगा, इससे सम्बन्धित सुझावों को कृषि विपणन के पिछड़ेपन को दूर करना, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि, कृषि विपण न तकनीक में सुधार कृषि उपज में वृद्धि एवं संग्रहण किये जाने का प्रयास करने के साथ-साथ कृषि विपणन के परम्परागत पद्धतियों के स्थान पर कृषि विपणन पद्धतियों में वर्तमान तकनीक उपलब्ध कराए जाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिए जायेगे, कृषि विपणन में परिवहन एवं यातायात का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

रायसेन जिले को प्रदेश एवं देश के कृषि विप णन बाजार से जोड़ने हेतु आवश्यक सुझाव के साथ-
साथ कृषि मूल्यों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण नीति निर्धारित की जायेगी। कृषि विपणन भी उपर्यु क्त महत्वपूर्ण तथ्यों के साथ-
साथ कृषि उत्पादन का परिसंस्करण, कृषि परि संस्करण हेतु प्रमुख नीतियो यथा 'कृषि' उत्पाद को सुखाना, विपणन के लिए उपलब्ध कराना एवं वित्तीय सुविधाएॅ उपलब्ध कराए जाने का प्रयास किया जाएगा। शोध क्षेत्र के कृषि विपण न की अपार सम्भावनाएॅ होते हुए भी यहा की कृषि विपणन भी व्यवस्था ठीक नहीं है।

पूर्व शोध की समीक्षा:-

काॅनराय एट आल (2001) भारत में ग्रामीण कृषक परिवारों के पास आय के साधन के पशु उपलब्ध है। राष्ट्रीय स्तर पर पशुधन की आबा दी बढ़ी है हालांकि एक क्षेत्रीय पैमाने और अ र्द्धशुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से स्थिति बहुत अ लग और अधिक जटिल है, उदाहरण के लिए ग्रामीण क्षेत्र के भीतर पशुधन बढ़ी जाती है त था शहरी क्षेत्रों में पशुधन की आबादी कम होती है। जिससे ग्रा◌ीमण किसानों की स्थिति सुधर रही है।

ब्रिजेन्द्र पाल सिंह (2000) भारतीय अर्थव्यव स्था की रीढ़ कृषि है। इसके विकास से अर्थव्य वस्था में दृढ़ता आती है। राष्ट्रीय आय में इस का योगदान 34 प्रतिशत के आसपास है। गत वर्षो में खाद्यान तथा व्यावसायिक फसलों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। कृषि उत्पादन को प्र भावित □□□□□□□तत्वों में प्राकृतिक औ□ □ र्थिक दोन□ महत्वपूर्ण है□ विगत □□-
□□□ दशकों में श□□□□ में द्वितीयक क्षेत्र ए□□□□ □□□□ क्षेत्र व□ तीव्र गति □□विस्तार ह□□□ □□प्र □□□□ □□ की कार्यशील जनसंख्या □□ 52 प्रति □□ प्राथमिक क्षेत्र □□ आश्रित है□ □□ में कृषि 115.5 मिलियन कृ□□□ परिवारों की आजीवि □□ □□ माध्यम □□□ □□□□□□ कि □□□ राष्ट्रीय उत्पाद □□ □□□□□ 15 प्रतिशत भ□□ कृषि □ उसकी □□□□□ क्रियाओं □□प्राप्त होत□ □□□ □□□ □ में ३□□□ महत्वपूर्ण उद्योग प्रत्यक्ष रूप □□ कृषि □□ निर्भर देश की 1.21 □□□ □□अधिक जनसंख्या □□खाद्यान □ खाद्य पदार्थो की □ पूर्ति कृषि क्षेत्र □□ही की □□□□ □□□करोड़ों □□□ □ □□□ प्रतिदिन चारा कृषि क्षेत्र से□ही प्राप्त हो □□ □□□

International Journal of Advancement in Electronics and Computer Engineering (IJAECE)
Volume 12, Issue5, May 2023, pp.502-512, ISSN 2278 -1412
Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

□□. □□. □□ □□□□□ (2006) □□□□ □□ग्रामी □ क्षेत्रों में अधिकतर □□□□□ □□□□ कृषकों खेतिहर मजदूरों □□□ अन्य श्रमिकों, शिल्पियों, व्यवसायिक □□□□□ □□□□□□□परिवारों □□ ही बाहुल्य □□ परन्तु □□ □□ इनमें □□अधिकांश परिवार गरीबी □□□ □□□□□□□□□ व्यतीत □ □ □□□हैं! □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□कि □□□ □ □□ □□□□□ □□□आर्थिक विकास ग्रामीण क्षेत्रों □□बुनियादी विकास □□ ही आधारित □□ ग्रा□□□ विकास की □□□□□□ समस्याएं जिनमें प्रमुख रूप □□आर्थिक अ□□□□□□□, कृषि, □□□ □□□कुटीर उद्योग □ समान्वित विकास की □ मस्याएं □!

3. □□□ प्रविधि

□□□□□ □□□□में स्थित मण्डियों में □□निदर्शन विधि □□ अनुप्रयोग □□□□□□ □□□□□□□□□ □ ण्डियों का अध्ययन □□ □□□ चिन्हित मण्डियों □□ प्रतिक अध्ययन □□लिए □□□ □□□□□ □ ण्डियों के □□□ में उनकी स्थिति कार्यक्षेत्र आ दि □□ ध्यान □□□□□□ □□□□में □□□ तहसीलों में □□□□-

□□ विनियमित मण्डी □□□ □□□□में □□ प्राथमिक स्तर में □□□ में स्थित विनियमित मण्डी □□ □□□ □□ अध्ययन किया □□□□□

मण्डी सम्बन्धी तथ्यों की जानकारी प्राप्त क□ □□□□प्रश्नावली ब□□□□ मण्डी समिति के□□□ धिकारियों एवं मण्डी सचिवो □□सम्पर्क अभिया □ द्वारा विषय □□सम्बन्धित जानकारी एकत्रि □ □□ उपक्रम □□□□ □□□□□ कृषि सम्बन्धी उत्तर प्राप्त कर□□□लिए स्तरवार निदर्शन विधि □□ प्रयोग किया □□□□□ अन्त में सांख्यिकी विश्लेषण □□□□ शोधकर्ता द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत □□ □□□□ □□ सम्बन्ध में एकत्रित किए □□□प्राथमिक द्वितीयक □□ □□□ □□□□ □□□किया □□□ □□

कृषि विपणन तकनीकी में □□□□, कृषि उत्पादन में वृद्धि, मध्यस्थों की समाप्ति, कृषि विनिम □ □□□वित्तीय सुविधाए□, कृषि उत्पाद मूल्य में वृद्धि त□□ कृषि विपणन □□ व्यावसायिक कार्य, व्यवसायिक □□□□, □□□□ निवेश, □□□□□□ षि व्यापारियों को संरक्षण कृषि □□लिए वित्तीय सुविधाए□, व्यावसायिक प्रशिक्षण, या□□□□□ □□ विकास, भण्डारण प्रक्रिया में □□□□, व्यावसायिक स्थिति का मूल्यांकन, मूल्य में स्थिरता □□□□□□□ प्रभाव □□□□□ कृषि विपणन में जमाखोरी की समाप्ति, कृषि क्षेत्र □□ औद्योगि □ क्षेत्र □□□□□□□□□-

□□□ □□□ में कृषि उत्पाद □□विक्रय हे□□□□ □ श्यक सुविधाए□ प्रदान □□□□□□ प्रयास □□□□□ कृषि विपणन क्षेत्र में सहाकरी समितियों के□वि□□□ □□□कृषि विपणन क्षेत्र में सहकारी समितियों □□विकास □□□सहकारी एजेन्सी द्वारा □□ मात्रा □□ पूर्व निर्धारण उत्पादक □ व्यापारियों □□कृषि □□ में वृद्धि जै□□उपायों □□ □□□□□□ □□कृषि विपणन □□□ कृषि □□□ में उत्तरोत्तर वृद्धि हो□□□ कृषि उपकरणों वित्तीय सुविधाओं

Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

में वृद्धि के□□□ ही अन्य आवश्यक □□□□ सुविधाओं में विकास □□□□□□ किये □□□□ सहकारी विपणन व्यवस्था □□ प्रोत्साहन दिया □□□□ उत्पादको □□ उचित मूल्य दिलाए □□□□ □□□□ ही पूंजीवादी □□□□ □□ □□□□□□ प्रया □ किए □□□□, □□□ ही कृषि विपणन व्यवसा □ □□ विस्तार किया □□□□, विस्तार के□□□ ही □□ □अन्य विकसित राज्यों की कृषि विप □□ □□□□□ किया □□□ □□

□□□ □□उद्देश्य:-

□ कृषकों □□सहकारी बैंकों की आर्थिक द □□□ □□□ अध्ययन □□ □□□□ □□□□ स्तर □□ □ □□□□□□□आवश्यक □□□□ प्रस्तुत क□□□

□ सहकारी बैंकों के □□□□□ द्वारा ग्रामीण कृषि प्रक्षेत्र की समस्याओं □□ □□ □□□□□□ □ मन्वित प्रयास □□ □? □□□□अन्तर्गत न □□□ □□कृषकों की □□□□ की □□ □□□□ □□□ □ न्नयन □□आवश्यक □□□□/□□□□ उपलब्ध □ □□□□

□ □□□□में संचालित सहकारी बैंकों के□विभिन्न □□□□□ □□लाभान्वित कृषकों □□आर्थिक विकास की □□ प्राप्त कर उसकी समीक्षा □□ □□

□ संस्थागत बैंकों की कार्यप्रणाली एवं ब्यूह □□□□ □□ अध्ययन।

□ केन्द्रीय सहकारिता बैंक □□द्वारा दी □□ □वाली □□□□□ □□□□□□□ □□फलस्वरूप हितग्राहियों के□□□□□□ प्रभाव □□ अध्ययन □□□□ □

□ संस्थागत बैंकों द्वारा □□□□□□ □□□विभिन्न कार्यक्रमों क□ अध्ययन □□□□

□ कृषकों की आर्थिक दशा □□□□□□ □□□ समुचित साधनों □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ भविष्य में इ□ □□□□□ □□ □□ प्रभावशाली □□□□ □□ □□

□□□ □□□□□:-

''सितीर्षुः दुस्तरम □□□□ दुहुपेनाडस्मि □□□□□''□ ज्ञान की छोटी □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□की इच्छा स्वरूप मे□प्र □□□ □□□□ शोधसामग्री निश्चय ही अध्ययन की विविध सी□□ में संकलित □□आर्थिक वि □□□ □□ □□□ विषयवस्तु है□□□□प्रत्येक अं□ □ □□ □□□ ग्रन्थ की □□□□ की □□ □□□□ □□, ग्रामीण क्षेत्रों के□आर्थिक विकास □□ स्पर्श क□ आरंभिक अध्ययनकर्ता विविध रूपों में वर्णन □ □□□□□ □□□□ आर्थिक विकास □□किसी □□ क्षेत्र □□ □ □□□ विभिन्न स्वरूप क□ □□□ □ ध्ययन किया □□□□ व्यक्तिशः अध्ययनकर्ता हो □□□□□□□ अर्थ □□□ समयावधि की अरूपताव □ आर्थिक विकास □□विभिन्न क्षेत्रों का विशद विश्लेषण सम्भव नहीं □□ □□□ □□फिर □□ वि □□ वस्तु □□ पर्याप्त रूप- में स्पष्ट किया □□□ □□

अध्ययन □□□□□ की □□□ में आर्थिक विकास □□अन्तर्गत अ□ □□वाली □□□ उत्पाद वस्तुओं

International Journal of Advancement in Electronics and Computer Engineering (IJAECE)
Volume 12, Issue5, May 2023, pp.502-512, ISSN 2278 -1412
Copyright © 2012: IJAECE (www.ijaece.com)

के **उत्पादन की स्थिति** पर समान **ध्यान नही दिया** गया है

प्रस्तुत शोध **की** सीमाए रायसेन **राजस्व क्षेत्र अंतर्गत** आनेवाले **विभिन्न क्षेत्रों में केन्द्रित है अध्ययन** का **क्षेत्र** मूलतः 2011 के बाद **की** जिला **सहकारी कृषि** एवं **ग्रामीण विकास बैंक** का **वित्तीय प्रबंधन** एवं **कृषि विकास में** योगदान **नीतियों** खासतौर पर ऋण व **वसूली नीतियों** पर **केन्द्रित है** इस तरह **अध्ययन** जिलेके **विभिन्न क्षेत्रों में स्थित बैंकों** एवं **उनकी** ऋण व **वसूली नीतियों** के **गतिविधियों** पर **केन्द्रित है**

विषयवस्तु मे **अनावश्यक विस्तार** सेबचनेके **लिए** और **सहकारी बैंक की** ऋण **वसूली नीतियों** साख के शोध **परिणाम हासिल** करनेके **लिए अध्ययनकर्ता** ने **अध्ययन** का **केन्द्र विविध धर्मी** रायसेन जिले **की सहकारी कृषि** एवं **ग्रामीण बैंक** को बनाया गया है

शोध का **महत्व** एवं **कठिनाइयाॅ:-**

कृषि भारतीय **अर्थव्यवस्था** का आधार हैजिस के **समुचित विकास** के **बिना किसी** भी **प्रकार की** आम जीवन सेजुड़ी **विकास की गतिविधियों की परिकल्पना नहीं की** जा सकती **विभिन्न स्रोतों से प्राप्त** होने **वाली जानकारियों** के अनुसार देश का **सर्वाधिक वर्ग कृषि** से **संबंधित** हैदेश **की कृषि व्यवस्था** और **कृषि नीति** ऐसी है **कि कृषि** अभी भी पुरातन **नीतियों** पर **आधारित** हैशासन और **प्रशासन स्तर** पर **दीर्घकालिक सहकारी बैंकिंग नीतियाॅ निर्मित** होतीहै जिनका संबंध **कृषि क्षेत्र की वास्तविकता** से **नहीं** होता कोरे **सिद्धांत** पर **आधारित** सहकारी **बैंकिंग की नीतियों** के चलते **कृषि** आज भी नई **परम्पराओं** को **स्वीकार नहीं** कर पाती देश के कुछ **क्षेत्रों** को अगर छोड़ देतो **कृषि फर्म** और कृषक का नाम आते **ही** एक **विचित्र** पीड़ा का बोध होता है। भारत का **किसान** आज भी दो जून **की रोटी** के **लिए** मोहताज है **उर्वरताविहीन** खेत , लगातार घटते **कृषि** संसाधन , पढ़े **लिखे विकासशील लोगों** का **कृषि** सेदूर हटना भौ**तिक संसाधनों की** बढ़ती **कीमतें** समय अनुकूल बीज खाद एवं **अन्य** सहायक **वस्तुए कृषि** यं**त्रों की भारी कीमतें उत्पादन विक्रय की** साख **नीति** का आभाव **आदि** के चलतेरायसेन जिले **की कृषि** अभी भी अधोगामी है।

विगत वर्षो में ग्रामीण विकास के **उन्नयन** के **लिए** जिला **सहकारी कृषि** एवं **ग्रामीण विकास बैंक द्वारा** उठाए गये **प्रभावी** कदमां **में** सबसे **महत्वपूर्ण** जिलेके **विभिन्न क्षेत्रों में कृषि बैंकों,** जिनके **माध्यम** से **कृषिकों कृषि उत्पादों** का **समर्थन मूल्य मिलने की गारंटी दी** गई है

4. सम□□न

प्रस्तुत अध्ययन जिला **सहकारी कृषि** एवं **ग्रामीण विकास बैंक** का **वित्तीय प्रबंधन** एवंरायसेन ज़िलेके **आर्थिक विकास में** योगदान पर के

[510]

न्द्रित है। □□□□□पृष्टिभूमि में म□□□ अध्ययन में इ□ विभिन्न कारणों □□ □□ संकेतिक विवर □ प्रस्तुत क□□□□ प्रयास किया □□□ □□ □□□ □□□ अर्थव्यवस्था में सहकारी बैंकों की सहभागि □□ □□ दृष्टिगत र□□□□ प्रस्तुत श□□ अध्यय □ □□महत्व □□ प्रतिपादन किया □□ □□□□ □ □□

अध्ययन □□□□□□ विभिन्न प्रकार की कठिना □□□□□□□□ □□□ विषय सामग्री □□□□□ □□ □□□ □□ आपेक्षित समांकों □□□□□ □ □□□□□□ विषय वस्तु □□□□□□□ में □□□□, सत्यता की □□□ □□□□ □□ जटिल समस्या रही। अध्ययन केन्द्र सम्पूर्ण □□□□□ राजस्व क्षेत्र हो□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ प्रतिनिधित्व स्वाभाविक रूप □□सम्भव नहीं □□ □□□ □□ □□□□में □□□- □□□/ग्राहकों/प्रतिनिधियों के हो□□□□□□□ □□□ क्षित मात्रा में सही परिणाम नहीं □□ □□□□ □□ कृषिको/उपभोक्ताओं □□□□□ मात्र □□□ □□□□ □□लिए कृषि उत्पाद □□□□ □□□□□में ग्रामीण आर्थिक विकास की परिकल्पना □□□□ हास्यास्प □ □□ □□अध्ययन □□□□□□ □□□ □□□ कि □□□ □□ राजस्व क्षेत्र के□70 प्रतिशत व्यापारियों क□ □□□ बैंकों से नहीं बल्कि □□□साहूकारों □□□□ कृषि □□ □□□□□□ कृषि □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□ कृषि नीतियों से□□□□□□ □□□□□□□□□□ □ स्वाभावि □ रूप □□□□□□विचारों की अभिव्यक्ति क□□□ में □□□□□□□□ राजस्व क्षेत्र के□बैंक अधिकारी □ र्मचारियों के सं□□ कृषकों □□किसी □□ प्रकार □□नहीं दिखते कर्मचारियों का सं□□ कागजों की □□□□ पूर्ति से है□ □□□ □□□□ □□□समंकों □□ आधारित अध्ययन क्षेत्र की कृषि □□ की □□□ □□□□□ स्थिति में स्वाभाविक है□अध्ययन □□□□□□ विभिन्न प्रकार की विसंगतियों का □□ □□□ □□□□ स्वाभाविक □□ □□□□

संदर्भ

1. **वर्मा, रवि, □□ सिंह, आदित्य** (2019). "**□□□□□ □□□□□□□□ स्टडी □माध्यम □क्षेत्रीय सहकारी बैंक □□कृषि विकास में □□□□□□ की भूमिका।" अंतर्राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन □□ विकास**, 9(3), 469-481.

2. **शर्मा, □□□□, □□ □□□, □□□□** (2018). "**क्षेत्रीय सहकारी बैंक द्वारा कृषि □□ कार्यक्रमं □□ मूल्यांकन: □□ अध्ययन।" कृषि □□ ग्रामीण विकास**, 12(2), 152-168.

3. **मालिक, विक्रम, अं□ □□□□, □□□□** (2020). "**ग्रामीण क्षेत्र के□□ □□□□□□माध्यम संदर्भों की समीक्षा। ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समाजशास्त्र**, 35(1), 87-105.

4. **प्रजापति, दीपिका, □□ गुप्ता, □□□□** (2017). "**□□□□ सहकारी बैंक के□कृषि क्षेत्र में ऋ□ वितरण की प्रभावीता □□ अध्ययन: □□**

आंकड़ानुसारी विश्लेषण।" कृषि □□विकास, 22(4), 285-300.

5. □□□, सुमित, □□ □□□□, प्रियंका (2016). "□□□□ सहकारी बैंक □□ कृषि □□ □□□□□□ कार्यक्रम: उद्योगों के□प्रति प्रभाव □□ अध्ययन।" कृषि □□अर्थव्यवस्था, 10(2), 115-126.

6. □□□□, □□□□, □□ श्रीवास्तव, □□□□ (2021). "□□□□ सहकारी बैंक द्वारा कृषि विकास में □□□□□□□□□□ की एकांकी अध्ययन." कृषि □□□ संगठनिक विकास, 16(2), 125-141.

7. तिवारी, अ□□□, □□ पाटिल, □□□□ (2019). "□□□□ सहकारी बैंक के□कृषि क्षेत्र में ऋ□ प्रबंधन: ग्रामीण क्षेत्र □□विशेष संदर्भ में □□ अध्ययन." राजनीति □□ कृषि अर्थव्यवस्था, 7(1), 56-68.

8. सिंह, □□□□, □□ □□□□, □□□□ (2018). "□□□□ सहकारी बैंक के□द्वारा कृषि □□ □□□□□□□ □□ मूल्यांकन: ग्रामीण क्षेत्र □□□□□□□□ □□□□□ □□ अध्ययन." कृषि □□ कृषि विज्ञान, 13(3), 123-136.

9. □□□, □□□, □□ □□, □□□□ (2017). "□□□□ सहकारी बैंक द्वारा कृषि □□ कार्यक्रमों का मूल्यांकन: किसानों के□परिप्रेक्ष्य में □□ □□□□□ स्टडी." कृषि □□ शहरी विकास, 22(2), 167-180.